आज है इंसान कैद....

आज है इंसान कैद,

जानवर और प्रकृति, हुई इंसानोँ के दुष्कर्मों से आज़ाद ।

आसमाँ है मुस्कुराया, चिड़ियाँ चहक उठी,

खुश हुई धरती माँ , जो , मानो थी हमसे रूठी।

इंसान भुगत रहा है आज सज़ा अपने कर्मों की,

लड़ना है आज अपनी ही ख्वाइशों से, बरसों से चली आ रही

लड़ाई नहीं है अब धर्मों की ।

घर में रहना है, एकमात्र उपाय,

अमीर – गरीब , हिंदू- मुस्लिम , सब हुए है असहाय ।

सब्र रखना है ,इस समय सबकी जान के लिए ज़रूरी,

हमारा हौसला ही हराएगा, ये महामारी।

Name Jahanvi Sharma Admission number V-2017-03-021

UG -third year